युवा पेशेवरों के लिए आचार नीति

राहुल शरण

एक विद्यार्थी से पेशेवर बनने तक का सफर एक कठिन यात्रा है. भारत में रोज़गार पाना आसान नहीं है, विशेषकर ऐसे में जब अनेक शिक्षित, कुशल और प्रतिभा संपन्न युवा मौजूद हैं. सरकारी नौकरी पाना और भी कठिन है, क्योंकि आमतौर पर इसके लिए कठिन चयन प्रक्रिया से गुजरना होता है, जिसमें लिखित परीक्षा, सामूहिक विचार विमर्श और व्यक्तिगत साक्षात्कार शामिल हैं.

रोज़गार पा लेना निश्चित रूप से वित्तीय सुरक्षा, सामाजिक पहचान और आत्म सम्मान बढ़ाता है. यह मान लेना बिल्कुल स्वाभाविक है कि रोज़गार पाने के बाद हमारी चुनौतियां काफी कम हो जाएंगी. हालांकि इसके बाद जब हम काम शुरू करते हैं, नई तरह की चुनौतियां हमारे समक्ष आती हैं. कार्यशील जीवन, कॉलेज के जीवन से या अन्य प्रकार के सामाजिक सम्पर्कों से बिल्कुल अलग होता है. विद्यार्थी जीवन में हम अपने मित्र चुनने के लिए स्वतंत्र होते हैं, लेकिन रोज़गार में हम अपना प्रबंधक, सहकर्मी या यहां तक कि अपने अधीनस्थ कर्मियों को भी नहीं चुन सकते. हमें उन लोगों के साथ और उन परिस्थितियों में काम करना होता है, जो काम का माहौल हमें उपलब्ध कराता है.

रोज़गार के साथ अधिकार संपन्नता की भावना जुड़ी होती है और यह बहुत ही सही कहा गया है कि अधिकार संपन्नता के साथ जिम्मेदारियां आती हैं - जितनी अधिक अधिकार संपन्नता-उतनी ही अधिक जिम्मेदारियां. युवा पेशेवरों को अपने काम के परिणाम और अपने निर्णयों के प्रभाव को अच्छी तरह समझना जरूरी है.

एक पेशेवर के रूप में रोज़गार के साथ हमें जिन चुनौतियों का ध्यान रखना होता है, उनमें एक चुनौती आचार नीति से संबंधित है. आचार नीति की परिभाषा हम नैतिकता या आचरण नियमों की प्रणाली के रूप में कर सकते हैं, जो यह स्पष्ट करती है कि व्यक्ति और समाज के लिए क्या सही और हितकारी है. एथिक्स शब्द ग्रीक शब्द एथोस से आया है, जिसका अर्थ है - आचरण, आदत या चरित्र. यहां यह उल्लेख महत्वपूर्ण है कि कुछ मामलों में अनैतिक होना कानून सम्मत सही रास्ते से बिल्कुल अलग हो सकता है. नैतिकता कानून द्वारा बाध्यकारी विषय नहीं है.

सरकारी कर्मचारियों से आचार नीति और मूल्य संहिता का पालन करने की अपेक्षा की जाती है. उदाहरण के लिए नीचे कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं का उल्लेख किया जा रहा है, जो कुशल प्रशासन और नागरिकों के लिए बेहतर सेवाएं सुनिश्चित कराने की लोकसेवकों की जवाबदेही के वांछित मानकों से संबंधित हैं:

- कर्तव्यों के निर्वहन में योग्यता, न्याय और निष्पक्षता के सिद्धांतों का संवर्धन;
- जवाबदेही और पारदर्शिता बनाए रखना;
- राजनीतिक तटस्थता का पालन;
- आम लोगों के साथ विनम्रता और शालीनता पूर्ण व्यवहार;
- सार्वजनिक कर्तव्यों से जुड़े अपने निजी हितों को स्पष्ट करना और इनके बीच किसी संघर्ष के समाधान के उपाय करना, जिससे सार्वजनिक हितों का संरक्षण हो;
- न्याय और निष्पक्षता से काम करना तथा किसी के भी खिलाफ विशेषकर, समाज के निर्धन और सुविधा वंचित वर्गों के साथ कोई भेदभाव न करना.

एक पेशेवर के रूप में हमें विनम्र, शालीन और उत्तम सहयोगी, बॉस तथा अधीनस्थ कर्मी बनने और सुदृढ़ नैतिक मूल्य बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए. युवा पेशेवर नैतिक मूल्यों को लेकर सर्वाधिक संवेदनशील होते हैं. हालांकि वे काम में नए हो सकते हैं, लेकिन इसके बावजूद कौशल और अपने कार्य को अच्छी तरह संपन्न करने के आवश्यक उपायों की समझ विकसित करने में लगे होते हैं.

युवा पेशेवरों पर किए गए अध्ययनों में से एक से यह बात सामने आई है कि युवा पेशेवर अक्सर इस बात से अवगत होते हैं कि सही क्या है, लेकिन वे सही कदम नहीं उठा पाते, क्योंकि नियमों में लचीलापन रखने से उन्हें अपने कॅरिअर में आगे बढ़ने में मदद मिलती है. यदि हम नहीं जानते कि सही क्या है, तो कुछ समय इस बारे में सोचने में लगाएं, इससे हमें सही कार्य दिशा का ज्ञान होगा.

युवा पेशेवरों को अपने रोज़मर्रा के काम में कई नीतिगत सवालों का सामना करना होता है, जैसे ..... ऐसे में क्या किया जाए, जब बॉस या विभाग का माहौल ऐसी स्थिति पैदा कर दे, जिसमें जो कुछ भी करना पड़े, वह अनैतिक कार्रवाई मानी जाए. ऐसी स्थितियों में यह सोचना आसान लगता है कि इस मुश्किल से निकलने का एकमात्र तरीका है अपने कॅरिअर पर रोक लगा देना, लेकिन स्पष्ट रूप से यह सही कदम नहीं है. ऐसे मामले में अपने बॉस के समक्ष कोई वैकल्पिक या नीतिगत समाधान रखना सर्वोत्तम होगा. यदि आप कोई प्रभावी समाधान नहीं तलाश पाते, तो किसी भरोसेमंद व्यक्ति का सहारा लें. उनके साथ स्थिति पर विचार विमर्श करके संभावित समाधान पर अपने विचार सामने रखें.

युवा पेशेवरों को अपने निर्णयों पर बार बार मनन करना चाहिए. उन्हें अपने आप से पूछना चाहिए कि क्या उन्हें अपने इस प्रकार के कर्मी होने पर गर्व है? और क्या वे ऐसे समाज में रहना चाहते हैं, जिसमें पेशे का प्रत्येक सदस्य मौजूदा ढंग से काम कर रहा है. इन सवालों पर नियमित रूप से मनन करने से स्वयं को ईमानदार बनाए रखने में मदद मिलेगी और एक गलत निर्णय या कार्य को दुरुस्त करने का मौका मिलेगा.

जब हमारे समक्ष नैतिक विभ्रम की स्थिति होती है, तो हम में से अधिकांश अपने कदम को यह सोच कर सही ठहराते हैं कि दूसरा कोई विकल्प नहीं था. हमें इस बिंदु पर सीधा और सच्चा रवैया अपनाना चाहिए. यह कह कर अपने आप को मूर्ख बनाने का प्रयास नहीं करना चाहिए कि हमारे समक्ष कोई विकल्प नहीं था. विकल्प हमेशा हमारे सामने होता है और उसे अपनाना या न अपनाना हमारे ऊपर है.

अनेक अनैतिक कार्यों में कोई न कोई आपसे कहेगा कि हमें व्यावहारिक बनना चाहिए. जितनी जल्दी हो सके इस बहलावे से निकलना चाहिए. 0अधिकांशतः बार व्यवहारिक होने का अर्थ होता है नैतिकता को नजर अंदाज कर एक सुविधाजनक/अपने लिए लाभदायक रास्ता ढूंढ निकालना.

नैतिकता की प्रत्येक संहिता बड़े पैमाने पर तीन आदर्शों पर टिकी है - निस्वार्थता, न्याय और समानुभूति.

न्याय अपेक्षा करता है कि लिया गया कोई भी निर्णय संभी संबंधित पक्षों के लिए उचित और निष्पक्ष होना चाहिए. किसी के भी साथ धर्म, जाति, लिंग, नस्ल, क्षेत्र भाषा, पृष्ठभूमि या ऐसे किसी अन्य आधार पर भेदभाव नहीं होना चाहिए. किसी भी प्रकार का भेदभाव गलत है. किसी भी परिस्थिति में न्याय के साथ समझौता नहीं किया जाना चाहिए.

समानुभूति की अपेक्षा है कि हम दूसरों के साथ वही व्यवहार करें, जो उनसे हम अपने लिए अपेक्षा करते हैं. हमें स्वयं को दूसरे व्यक्ति के स्थान पर रख कर सोचना चाहिए तभी हम दूसरे व्यक्ति का दृष्टिकोण समझ पाएंगे.

निस्वार्थता कोई अस्पष्ट विचार नहीं है लेकिन, शायद अपनाने में यह सबसे कठिन है. यदि हम सामने आए समीकरण से अपना स्वार्थ हटा दें, तो हम तटस्थ निर्णय ले सकते हैं. यह गौर करना महत्वपूर्ण है कि जो भी निर्णय हम लें, उसमें हमारा कोई स्वार्थ न जुड़ा हो/या स्वार्थ का कोई संघर्ष उसमें न हो. स्वामी विवेकानंद के अनुसार नैतिकता का मूल मंत्र है - ''स्वयं नहीं, वरन स्वयं रहित''.

निस्वार्थता पर निर्णय आसान है, लेकिन हम उन स्थितियों में क्या समाधान निकालें, जहां न्याय की आवश्यकता और समानुभूति के बीच में संघर्ष हो, जैसे एक ऐसी स्थिति की कल्पना करें, जहां यदि हम न्याय के आधार पर निर्णय लेते हैं, तो वह निर्णय समानुभूति के आधार पर लिए गए निर्णय से बिल्कुल अलग होगा. एक ऐसी स्थिति पर विचार करें, जहां आपको वार्षिक वेतनवृद्धि पर निर्णय लेना है. सीता ने रमेश से बेहतर कार्य संपादन किया है, लेकिन रमेश को पैसों की कहीं अधिक आवश्यकता है ताकि वह अपने परिवार और बीमार माता पिता की देखभाल कर सके, जबकि सीता अकेली और काफी धनी है. ऐसी स्थिति में रमेश के प्रति चाहे कितनी भी समानुभूति महसूस की जाए, लेकिन ऊंची वेतनवृद्धि सीता को दी जाएगी, यदि निर्णय लेने वाले ने केवल एक प्रबंधक के तौर पर निर्णय लिया हो.

कार्य नैतिकता की दृष्टि से काम को पूजा मानने से मदद मिलती है. हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि यदि कोई काम किया जाना है तो उसे अच्छी तरह किया जाए (अन्यथा इसे न करें). उत्तम कार्यनीति का अर्थ है कि जो भी काम हम करें या जो भी कार्य निष्पादन हम दें, उसमें गुणवत्ता की मुहर लगी होनी चाहिए.

एक युवा पेशेवर के रूप में कार्य के उद्देश्य से अवगत होना महत्वपूर्ण है (जैसे पुलिस के लिए कानून व्यवस्था सुनिश्चित करना) और इस काम के सम्पन्न तरीके को लेकर सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना जरूरी है. इस बारे में इस क्षेत्र के रोल मॉडल/सराहनीय काम करने वालों की पहचान रखना सहायक हो सकता है. जैसे (वैज्ञानिकों के लिए) डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम, (पुलिस के लिए) किरन बेदी और (वित्त/बैंकिंग के लिए) रघुराम राजन का अनुकरण किया जा सकता है.

एक सरकारी लोकसेवक के रूप में हमें ऐसे निर्णय लेने होते हैं, जिनके दूरगामी परिणाम होते हैं. ऐसे में गांधीजी की उक्ति का ध्यान रखना बेहतर होगा. उन्होंने कहा था, मैं तुम्हें एक ताबीज दूंगा. जब कभी भी तुम संदेह में हो, या जब तुम्हारा स्वार्थ तुम पर हावी हो जाए, तो इसे आजमाना. निर्धनतम व्यक्ति और सबसे दुर्बल व्यक्ति (महिला) का चेहरा याद करना, जिसे कभी भी आपने देखा हो और अपने आप से पूछना कि तुम जो कुछ भी करने जा रहे हो, क्या वह इनके किसी काम का होगा? क्या उन्हें इससे कोई लाभ होगा? क्या तुम्हारा कदम उनमें अपने जीवन और नियति पर नियंत्रण बहाल करने में कामयाब होगा? दूसरे शब्दों में क्या यह भूखे और आध्यात्मिक रूप से निर्बल लाखों लोगों के लिए स्वराज (स्वतंत्रता) का मार्ग बनेगा? इसके बाद तुम्हें अपने संदेहों और सवालों का उत्तर मिलेगा और तुम्हारा स्वार्थ अपने आप पिघल कर दूर हो जाएगा'.

नैतिकता का एक पारंपरिक लेकिन बहुत आसान पाठ है:

''गांव के हित के लिए मनुष्य को अपने परिवार का त्याग करना चाहिए;

देश के हित के लिए उसे अपने गांव का त्याग करना चाहिए;

मानवता के हित के लिए उसे अपने देश का और

पूरे विश्व के हित के लिए सब कुछ का त्याग करना चाहिए''.

एक पेशेवर के रूप में हमें अपने विभाग के हित के लिए स्वयं का त्याग, संगठन के हित के लिए विभाग का त्याग, और देश के हित के लिए संगठन का त्याग करने को तत्पर रहना चाहिए.

ग्राहकों का ध्यान रखना (क्योंकि वे हमारे अपने अस्तित्व की वजह हैं) और अपने बॉस की बातों पर ध्यान देनाा बहुत महत्वपूर्ण है. हालांकि इसका अर्थ यह नहीं है कि ''ग्राहक हमेशा सही होता है'' या ''बॉस हमेशा सही होता है'' - एकमात्र सत्य यह है कि ''नैतिकतापूर्ण आचरण और कार्य हमेशा सही हैं''. यदि आपकी पेशेगत प्रतिबद्धता नैतिक मूल्यों से टकराती है, तो नैतिक आचरण/कार्य पर अडिग रहें. अपने विचार को प्राथमिकता दें और अपने वरिष्ठ कर्मियों को अपने विचारों पर हावी न होने दें.

मैं यह कह कर अपनी बात समाप्त करना चाहूंगा कि जब कभी जीवन में दोराहा आए, तो हमें सही दिशा की ओर जाना है, यह कठिन हो सकता है, लेकिन यह वह राह है, जो सिद्धांतों पर आधारित है, जो हमारे चरित्र को सबल करेगी. यदि कोई सही राह पर है, तो वो हमेशा सही कार्य करेगा - चाहे वह व्यक्तिगत जीवन में हो, एक पेशेवर के रूप में हो, समाज के एक हिस्से के रूप में हो, किसी व्यवसाय या सरकार के अंग के रूप में हो.

लेखक 'एथिक्स मैटर्स!! द टाइम्स नाउ!!' पुस्तक के लेखक हैं और एक शीर्ष बहुराष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी कंपनी में परामर्श समाधान निदेशक के रूप में कार्यरत हैं.

व्यक्त विचार व्यक्तिगत हैं.

(चित्र: गूगल के सौजन्य से)